Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-17, Issue-1, June-2023
www.researchguru.net

मैत्रेयी पुष्पा : झुलानट उपन्यास की कथानक

Dr.PARAS G CHAUDHARY
M.A B.ED M.PHIL PH.D 1,VAIBHAV PARK SOCIETY NAGALPUR PATIYA HIGH ROAD
MEHSANA-2 MO.9638166698

'झुलानट' उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा का रुढ़िवादी और सामाजिक उपन्यास है। यह उपन्यास का प्रथम संस्करण ई.१९९९ में राजकमल प्रकाशन और दूसरी आवृत्ति ई.२०१२ में नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास का वैचारिक पक्ष स्त्री विमर्श है। उपन्यास में मुख्य नायिका 'शीलो' और आम्माजी, बालकिशन, सुमेर की 'झुलानट' का अर्थ कहानी प्रस्तुत है। 'झुलानट का अर्थ होता है की नटो के द्वारा झूला पर अपनी कलाएँ दिखाना। दो दंडो के बीच रस्सी बंधी होती है और उसी रस्सी पे नोट अपनी कलाएँ दिखाता है। इस तरह रस्सी जीवन का प्रतीक है। मानव जन्म से मृत्यु तक जीवन की कला दिखाता है। उसी प्रकार झुले पर भी नट अपने कलाएँ दिखाता है। उस उपन्यास में सामान्य जीवन की समस्याएँ उभरकर सामने आई है। जीवन संघर्ष का सामना करती हुई विपरीत परिस्थितिओं में जीना शीखा जाती है। विशेष रुप से स्त्री को केन्द्र में रखकर इस उपन्यास की रचना की है। नट झुले पर अपना अनेक कथाएँ दिखाता है। उसी तरह मानव भी जीवन और मृत्यु के दौरान अनेक परिस्थितियाँ का उतार-चढाव का सामना करता है।

उपन्यास में प्रमुख पात्र शीलो, सुमेर, बालकिशन, आम्माजी है। इस उपन्यास में मुख्य पात्र स्त्री जो नायिका के रुप में 'शीला' है। अम्माजी का दो बेटे है। बडा बेटा सुमेर और छोटा बेटा बालकिशन है। बडे बेटे सुमेर की पत्नी शीला है। इस उपन्यास के संदर्भ में डॉ.राजेन्द्र यादव जी लिखते हैं - **"गाँव की साधारण-सी औरत है शीलो न बहुत सुंदर और न बहुत सुघड... लगभग अनपढ़, न उसने मनोविज्ञान पढ़ा है न समाजशास्त्र जानती है। राजनीति और स्त्री विमर्श की भाषा का भी उसे पता नहीं है। पति उसकी छाया से भागता है मगर तिरस्कार, अपमान और उपेक्षा की यह मार ने शीलो को कुएँ-बाड़ी की और ढकेलती है और न आग लगाकर छुटकारा पाने की ओर। जीने का निःशब्द संकल्प और श्रम की ताकत एक अडिग धैर्य और स्त्री होने की जिजीविषा... उसे लगता है कि उसके हाथ की छठी अंगुली ही उसका भाग्य लिखा रही है.. और उसे ही बदलना होगा।"**[१] **"झुलानट की शीलो हिन्दी उपन्यास से कुछ न भुले जा सकनेवाले चरित्रों में एक है। बेहद आत्मीय, पारिवारिक सहजता के साथ मैत्रेयी ने इस जटिल कहानी की नायिका शीलो और उसकी 'स्त्री शख्ति' को फोकस किया है।"**[२]

उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र शीलो व पुरुष बालकिन है। जब उपन्यास का प्रारंभ होता है तो अम्मा और बालकिशन में बिलकुल नहि बनती - **"अरे बालू, तू सो के बता रहा है हमें कि बेटा भिरमा रहा है मतारी को ? समझ रहा है कि आँखे मूँदे पीछे दुनिया में अँधेरा हो जाएगा। सुन तो रहा होगा लुगाई के बोल। और समझ भी रहे होंगे जला कि किसके दम पर ?"**[३] यानी दोनो में सट-पट रहती है। इस कथा में सुमेर का चरित्र प्रमुख नहीं बनता परन्तु इसके बिना कथा वलायमान भी नहीं होती। उपन्यास की कथा में पति द्वारा त्यागी गई स्त्री के जीवन का वास्तविक चित्रण किया गया है। सुमेर नोकरी के लिए गाँव छोडकर शहेर चला जाता है और शीलो को गाँव में

छोड देता है। अम्माजी बालकिशन कहेती है। शीलो को पत्नी के रुप में स्वीकार कर लें। लेकिन शीलो पारंपरिक रुप से बालकिशन से विवाह करने से इन्कार कर देती है। अम्माजी बालकिशन के दबाव के कारण शीला बालकिशन को शारीरिक संबंध बना लेती है। लेकिन पारंपरिक तौर पर पति के रुप में स्वीकार नही करती। शीलो का ब्याह पहले बालकिशन के बडे भाई सुमेर के साथ हो जाता है पर ब्याह सिर्फ रस्म भर का था। सुमेर पिता के जरिए किये गये सम्बन्ध के कारण शीलो को घर तो ले आता है लेकिन पत्नी स्वीकार नहीं करता और एक दिन उसे छोडकर शहर चला जाता है। शीलो ब्याह कर भी अनब्याही रहती है। शीलो पहले मृदुभाषी थी लेकिन समाज के थप्पड से शीलो में इतना बदलाव होता है की जबान से वह कडव हो जाती है। शीलो जो भी बात करती है वह कडवेपन से भरी होती है। - **"शीलो की अवाज है यह। महीन अवाज ने कलेजा कुरेदा उसका। तोंबिया गोल चेहरे वाली शीलो ! कल्पना में जागृत हो उठी। "हाँ, हाँ, तेरे बाप की घौंस में रहूँ और घी-गुड़ की बात करुँ ठगिनी।'' ''अम्मा !" बालकिशन जैसे खटिया में से रंभाया हो बछड़े की तरह, "चुप हो जाओ अम्मा। सबेरे ही सबेरे यह मुठभेड..."**[४]

शीलो पति के जरिए तिरस्कृत होने पर भी उसे पुनः प्राप्त करने के लिए व्रत-चंपादास के तंत्र-मंत्र व सजने-सँवरने के तमाम तरीके अपनाती है। - **"तीन काल के ज्ञानी चंपादास बैद भोर की ठंडी वेला में आकर अम्मा को बधाई देने लगे, "बालु की माँ, बोलो अष्टग्रह शांति और कुंडली कामनी का मंत्र-पाठ झूठा तो नहीं पड़ा ? मैंने क्या कहा था - चंडी माता तुम्हारे मनोरथ पूर्ण करेंगी। और जो वार खाली जाए, तो चंपादास नाम का कुत्ता पोसना।''**[५] परंतु स्वयं को असफल पाती है। जब माँ को पता चलता है कि सुमेरने शहर में दूसरा विवाह किया तो वह घर की मान-मर्यादा के लिए बालू को शीलो साँप देती है। तत्पश्चात शीलो नयी रीतियों व परम्पराओं में स्वयं को ढाल कर देवर के साथ धर्म का निर्वाह करती है। अपने भाभी के साथ इस तरह सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बालकिशन कदापि तैयार नहीं होता परंतु शीलो उसे अपने कब्जे में कर लेती है। उन दोनों में पति-पत्नी सा सम्बन्ध स्थापित तो होता है परंतु शीलो 'बछिया' करने के लिए इन्कार करती है। समाज की थू-थू सहती है। लेकिन अपना इरादा नहीं छोड़ती। शीलो इच्छाधारिन नागिन थी। जो मन में आया वह प्राप्त किया। बालकिशन का ध्यान खती की ओर खींचती है। बालकिशन के कब्जे में दो-दो हिस्सा जोत। वह जो चाहे, सो पाए। सच में, जब से शीलो के संग-साथ हुआ, उसका मन किसानो में कुछ ज्यादा ही रमने लगा। शुरुआती दिनों में जब अम्मा ने हल की मूठ पकडने को कहा था तो मना नहीं कर पाया था बालकिशन, पर बैला के संग-संग चलता आंसुओं से रोया करता था। शीलो को खेती के बारे में सबकुछ पता होता है। की खती कैसी करनी है ? कब क्या बोना है ? आधुनिक 'फसलचक्र' आदी बातें वह बालकिशन को समझाती है। बैंको में पैसा जमा करती है। रहन-सहन वेशभुषा में परिवर्तन लाने का प्रयास करती है।

बालकिशन का इस तरह शीलो के वेश में चला जाना माँ को सहन नहीं होता। मानो अब उसका अस्तित्व ही खत्म हो गया हो। अतः दोनों में संघर्ष की स्थिति प्रारंभ होती है। उनका संघर्ष चरम सीमा पर पहुँच जाता है। बालकिशन अम्मा और शीलो के बीच पीछता जा रहा था। बालकिशन घर के रोज-रोज के कलह के कारण उब जाता है और घर छोडकर भाग जाता है। बालकिशन बाहरी रुप से सन्यासी तो बन जाता है। परंतु चाहकर भी मन से विरक्त नहीं हो पाता, क्योंकि उसके हर साँस में बस केवल शीलो बसी थी। उससे

वह छुटकारा नहीं पा सका। उसका यह अन्तद्वंद्व अन्त तक चलता है और उसकी अवस्था 'झुलानट' सी हो जाती है। सुमेर जब शीलो से अपने हिस्से की बात करता है तो वह चुप्पी साथ लेती है। इतना ही नहीं पुरे परिवार को अपने इशारे पर नचाने लगती है। दोनो भाइयों को हिस्सों पर कब्जा कर शील स्वयं को उनसे हुशियार समझने लगती है।

'झुलानट' उपन्यास में मुख्य तौर पर देखे तो शीलो और बालकिशन की कहानी है। मैत्रेयी पुष्पा ने समाज के सामने साहसिक पात्रो को रखकर समाज में चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने बताये है की समकालीन समय में स्त्री एक आसक्त नहि है लेकिन आस्था से स्त्री साहसिकता की साबिती दी है। स्त्री स्वतंत्रता के लिए सबसे पहले रिश्ते की स्वतंत्रता आवश्यक है। लेकिन सर्वप्रथम स्त्री के अस्तित्व और स्त्री सशक्तिकरण को महत्व दिया है। 'झुलानट' उपन्यास की भाषा ग्रमीण लहले से युक्त ऑचलिक भाषा है। बुंदेलखंड के आँचल की भाषा का प्रयोग हिन्दी भाषा का सौंदर्य बढ़ता है। आंचलिक शब्द मुहावरे उपन्यास को सहज तथा प्रवाहमय बनाते है। 'झुलानट' उपन्यास लघु उपन्यास की कोटि में आता है।

संदर्भ सूची :

१. मैत्रेयी पुष्पा - झुलानट - राजेन्द्र यादव (भूमिका से), पृ.५
२. मैत्रेयी पुष्पा - झुलानट - राजेन्द्र यादव (भूमिका से), पृ.५
३. मैत्रेयी पुष्पा - झुलानट - पृ.७, ८
४. मैत्रेयी पुष्पा - झुलानट - पृ.८
५. मैत्रेयी पुष्पा - झुलानट - पृ.३०